Clinical Psy

BIPOLAR DISORDER द्विध्रुवीय विकृति

द्विध्रुवीय विकृति मनोदशा विकृति का एक प्रकार है इस मानसिक रोग के दो पक्ष है जिसे Manic Phase और Depressive Phase कहते है। इन दोनो पक्षों के बीच गहरा संबंध है। रोगी मे कभी उत्साह पक्ष सक्रिय रहता है तो कभी विषाद पक्ष तो कभी दोनो पक्ष मिश्रित रूप से सक्रिय रहते है। अतः यहां इन तीनों अवस्थाओं मे रोगी के लक्षण की व्याख्या अलग-2 करने की कोशिश की जा रही है।

क. उत्साह अवस्था Manic Phase- इस अवस्था मे रोगी में उत्साह, हर्ष तथा क्रियाशीलता के लक्षण पाए जाते है। रोगी मानसिक तथा शारीरिक स्तर पर काफी सक्रिय दिखायी पड़ता है। इसके कथन तथा व्यवहार से आशावादिता झलकती है। उत्साह की मात्रा या तीव्रता के आधार पर Coleman ने इस अवस्था को तीन अवस्थाओं मे विभाजित किया है

1. सरल उत्साह Hypomania- उत्साह की इस सरल अवस्था मे रोगी सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा थोड़ा अधिक उत्साहित, उत्तेजित तथा क्रियाशील रहता है रोगी आशावादी बन जाता है वह बड़ी-2 योजनाओं का निर्माण करने लगता है वह हमेशा बोलता या गाता रहता है। यदि दूसरे लोग उसकी योजनाओं का विरोध करते है तो वह संवेगात्मक संवेगशील बन जाता है और आक्रमणकारी व्यवहार करने लगता है।

2. तीव्र उत्साह Acute mania- इस अवस्था में पहली अवस्था के सारे लक्षण मौजूद रहते है लेकिन लक्षणों की तीव्रता बढ़ जाती है वह दिन-रात बोलता, नाचता या गाता रहता है पहले की अपेक्षा अधिक आशावादी बन जाता है इसके कथन तथा व्यवहार से अहंकारी बन जाता है तथा दूसरों पर आदेश जारी करने लगता है। यदि उसके आदेशों की अवहेलना करते है तो वह तोड़-फोड़ करने लगता है और कभी-2 तो दूसरों की हत्या भी कर देता है। इसके रोगी को नींद नही आती, खाने पीने की भी चिंता नही रहती जिसकारण उसका स्वास्थ्य गिरता जाता है फलतः उसे अस्पताल मे भर्ती करना अनिवार्य हो जाता है।

3. अति उत्साह - Hypermania - उत्साह की इस गंभीर अवस्था में रोगी की मात्रा असंगत बन जाती है चिंतन विकृत हो जाता है तथा रोगी में श्रवण तथा दृष्टि विभ्रम विकसित हो जाता है। उसे समय और स्थान का ज्ञान नही रहता वह आक्रमणकारी और विध्वंसात्मक व्यवहार करने लगता है वह हमेशा चीखता चिल्लाता रहता है खाना पीना छोड़ देता है तो कभी-2 भूखों की तरह भोजन पर टूट पड़ता है वह गंदा व्यवहार भी करने लगता है। यदि लोग उसे रोकने की चेष्टा करते है तो उसपर आघात कर बैठता है

Scanned with CamScanner

ख. विषाद प्रतिक्रिया - Depressive reaction - इस अवस्था में रोगी में विषाद खिन्नता तथा निराशा के लक्षण देखे जाते हैं उसकी क्रियाशीलता घट जाती है उसका जीवन निरर्थक लगने लगता है विषाद की तीव्रता के आधार पर इस अवस्था को भी निम्न तीन भागों में विभाजित किया गया है

1. साधारण विषाद Simple Depression - इस अवस्था में रोगी में खिन्नता की मात्रा बहुत सीमित होती है रोगी ऐसा महसूस करता है कि उसका जीवन निरर्थक बन गया है जीवन में किसी तरह की आशा नहीं दिखायी देती लेकिन रोगी के संज्ञान संवेग और बुद्धि में किसी तरह की गिरावट नहीं पायी जाती है अतः इस अवस्था में रोगी को अस्पताल में भर्ती करने की आवश्यकता नहीं पड़ती मात्र साधारण चिकित्सा से ही ठीक हो जाता है।

2. तीव्र विषाद - Acute Depression - इस अवस्था में रोगी का विषाद काफी बढ़ जाता है दूसरों से मिलना जुलना तथा बातचीत करना छोड़ देता है। वह एकांत प्रिय और आत्म दोष से ग्रसित हो जाता है। वह अपने आप को कोसने लगता है और समझने लगता है कि उसने बड़े-2 पाप किए इसलिए भूकंप, महामारी, बाढ़ तथा महंगाई आदि घटनाएं घटित हो रही हैं। रोगी की निराशा इतनी बढ़ जाती है कि वह अपने जीवन को निरर्थक समझने लगता है और आत्महत्या का भी प्रयास करता है।

3. अतितीव्र विषाद - Hyper acute Depression - विषाद की यह काफी गंभीर अवस्था होती है जिसमें रोगी पूरी तरह विघटन पकड़ लेता है। वह आस पास की घटनाओं के प्रति उदासीन तथा भावशून्य रहता है वह इतना अकर्मण्य रहता है कि उसे ट्यूब से भोजन देने की आवश्यकता पड़ती है। इसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के भ्रम तथा विभ्रम पाए जाते हैं। इसका संबंध पाप मृत्यु, पुनर्जन्म आदि से होता है उसकी दैनिक उत्सर्जन क्रिया की निगरानी भी दूसरों को करनी पड़ती है।

ग. मिश्रित प्रकार Mixed Type - इस प्रकार के अंतर्गत रोगी में उत्साह विषाद के मिले जुले लक्षण देखे जाते हैं Coleman 1977 के अनुसार 15% से 25% रोगियों में इसतरह के मिश्रित लक्षण पाए हैं।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि द्विध्रुवीय विकृति के अनेक लक्षण हैं जिनके आधार पर इन्हें दूसरे मानसिक रोगियों से आसानी से अलग किया जा सकता है।

अब प्रश्न है कि द्विध्रुवीय विकृति के कौन-2 से कारण हैं तो इस संबंध में किए गए अध्ययन निम्न प्रमुख कारणों का उल्लेख मिलता है।

1 जैविक कारक Biological factor - इस विकृति के विकास में अनेक जैविक कारकों का योगदान है जिनके कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं

Scanned with CamScanner

i. वंश परंपरा - अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि यह रोग प्रायः वंशानुगत होता है। विद्वानों का मत है कि जिनके माता और पिता इस रोग से ग्रसित होते हैं उनके बच्चों में इस रोग के होने की संभावना अधिक होती है।

ii. शारीरिक रचना - उत्साह विषाद के उत्पत्ति में शारीरिक संरचना का भी हाथ होता है Kretschmer 1925 के अनुसार Pyknic type of Personality में इस रोग के विकसित होने की संभावना अधिक होती है। Sheldon ने भी इस विचार का समर्थन करते हुए बताया कि endomorphy type के लोगों को यह रोग अधिक होता है।

iii. मस्तिष्कीय विकृति - अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि मस्तिष्क में किसी प्रकार के विकार के उत्पन्न होने से इस रोग के होने की संभावना बढ़ जाती है Bain का मानना है कि मस्तिष्कीय तंत्र में गड़बड़ी उत्पन्न होने से यह रोग होता है।

2. मनोवैज्ञानिक कारण - उत्साह विषाद के विकास में जैविक कारकों के अलावे मनोवैज्ञानिक कारकों का भी हाथ होता है जिनमें प्रमुख निम्न हैं -

i. माता पिता तथा बच्चों के बीच संबंध - जब माता पिता तथा बच्चों के बीच मधुर संबंध नहीं होता है तो बच्चों में चिन्ता, निराशा, आत्मदोष इत्यादि भाव के लक्षण विकसित हो जाते हैं जो आगे चलकर उत्साह-विषाद को विकसित करने में काफी सहायक होते हैं। इसके अतिरिक्त जो बच्चे माता पिता के दबाव के कारण अंतर्मुखी बन जाते हैं उनके इस रोग के होने की संभावना बढ़ जाती है

ii. तनाव पूर्ण परिस्थिति - द्विध्रुवीय विकृति का एक कारण तनावपूर्ण परिस्थिति भी है देखा जाता है कि जिस व्यक्ति का जीवन तनावपूर्ण होता है उनके इस रोग के लक्षण के विकसित होने की संभावना बढ़ जाती है।

iii. दोषपूर्ण मनोलैंगिक विकास - मनोविश्लेषकों के अनुसार इस मानसिक रोग का मुख्य कारण दोषपूर्ण मनोलैंगिक विकास है विशेष रूप से मौखिक अवस्था में मनोलैंगिक विकास के दोषपूर्ण होने से आगे चलकर प्रतिगमन मनोरचना के कारण उत्साह विषाद के लक्षण विकसित होते हैं।

3. सामाजिक सांस्कृतिक कारक - उत्साह विषाद के विकास में सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों का भी योगदान होता है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति के लोगों में इसके लक्षण अधिक पाए जाते हैं। इसी तरह उच्च शिक्षितों में भी यह रोग अधिक होने का प्रधान कारण उनकी उच्च अभिलाषाएं हैं इसी तरह अधिक सभ्य संस्कृति में भी इस रोग के होने की संभावना अधिक होती है।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि द्विध्रुवीय विकृति के अनेक लक्षण एवं कारण है जिनके आधार आसानी से इनकी पहचान कर इन्हें अन्य मानसिक रोगियों से अलग किया जा सकता है।

07/02/2013

Scanned with CamScanner